“A Comparative Evaluation of the Concept of Social Justice of John Rawls and Bhimrao Ambedkar”

‘‘जॉन राल्स एवम् भीमराव अम्बेडकर के सामाजिक न्याय की अवधारणा का तुलनात्मक मूल्यांकन।’’

Synopsis

Submitted to
Maharshi Dayanand University, Ajmer for the Award of
Ph.D. in Political Science

Under Supervision of :

Dr. S.K. Singh
Lecturer in Political Science
Samrat Prithvi Raj Chouhan
Government College, Ajmer

Submitted by :

Vimal Kumar Mahawar
Lecturer in Political Science
Samrat Prithvi Raj Chouhan
Government College, Ajmer

APPENDIX - IV

Outline of Proposed Research Work

INDEX

S.N.			Page No.
1.	Name of Scholar	**Vimal Kumar Mahawar**	
2.	Title of Research Work	"A comparative Evaluation of the concept of Social Justice of John Rawls and Bhimrao Ambedkar" "जॉन राल्स एवम् भीमराव अम्बेडकर के सामाजिक न्याय की अवधारणा का तुलनात्मक मूल्यांकन।"	
3.	Location (a) institute/Department where the work is to be done	Samrat Prithvi Raj Chouhan Government College, Ajmer Department of Political Science	
4.	Importance of Proposed Investigation		1
5.	Review of work already done on the subject of proposed Research Study		3
6.	Research Gaps identified in the proposed field of investigation		7
7.	Objectives		8
8.	Major Hypothesis		-
9	Materials Methods/ Research Methodology		10
10.	Chapterwise details of proposed research		11
11.	Bibliography		13

Format For Outline of Proposed Research Work

1.	Name of Scholar (In English)	:	**Vimal Kumar Mahawar**
	(In Hindi)	:	विमल कुमार महावर
2.	Title of Research Work (In English)	:	"A comparative Evaluation of the concept of Social Justice of John Rawls and Bhimrao Ambedkar" ''जॉन राल्स एवम् भीमराव अम्बेडकर के सामाजिक न्याय की अवधारणा का तुलनात्मक मूल्यांकन।''
3.	Location		
	(a) Institute/Department where the work is to be done	:	Samrat Prithvi Raj Chouhan Government College, Ajmer Department of Political Science
	(b) Geographical area of Investigation, if any	:	

4. Importance of Proposed Investigation -

न्याय राजनीतिक चिन्तन की महत्त्वपूर्ण संकल्पना है। समकालीन उदारवाद ने इसे नए ढंग से पेश किया है। मानव एक चिन्तनशील प्राणी होने के नाते राजनीतिक समाज के प्रादुर्भाव से ही अपने लिए न्याय की मांग करता आया है। न्याय की समस्या मुख्यत: विभिन्न वर्गों, व्यक्तियों और समूहों के बीच विभिन्न वस्तुओं, सेवाओं, अवसरों, लाभों आदि को आवंटित करने की रही है। इसी कारण अनेक विचारकों ने स्वतन्त्रता और समानता के विरोधी दावों को हल करने के लिये अपने न्याय सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया है। उन्हीं विचारकों में से एक जॉन राल्स है।

जॉन राल्स ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'ए थ्यॉरी ऑफ जस्टीस' में अपना न्याय सिद्धान्त प्रस्तुत किया है। उसने हेयक के इस विचार का भी खण्डन किया है जिसमें हेयक ने समकालीन उदारवादी चिन्तक होने के बावजूद 'प्रगति बनाम न्याय' के विवाद में न्याय की अवहेलना करके प्रगति का पक्ष लिया है। राल्स ने अपने न्याय सिद्धान्त की शुरुआत में ही न्याय के बारे में तर्क दिया है कि अच्छे समाज में अनेक सद्‌गुण अपेक्षित होते हैं। उनमें न्याय का एक महत्त्वपूर्ण स्थान है। न्याय उत्तम समाज की आवश्यक शर्त है। परन्तु यह उसके लिए पर्याप्त नहीं है, क्योंकि किसी समाज में न्याय के अतिरिक्त दूसरे नैतिक गुणों की प्रधानता हो सकती है। परन्तु जो समाज न्यायपूर्ण है, उसकी प्रशंसा की जानी चाहिए। जो विचारक यह मांग करते है कि समाज की उन्नति के लिए न्याय के विचार को बाधा के रुप में खड़ा नहीं करना चाहिए, उनका ध्येय समाज को नैतिक पतन की ओर ले जाने वाला होता है। न्याय के बिना समाज की उन्नति और उत्तम समाज की स्थापना असम्भव है।

दूसरी ओर अम्बेडकर ने भारतीय मानस की सांस्कृतिक उलझन को स्पष्ट किया है। दलित बहुजनवाद के पुनरुत्थान हेतु आधुनिकतावाद को अंगीकृत करने पर बल दिया। भारतीय समाज के दलितों के उत्थान के लिये अपने विचार दिये। उनके उत्थान के लिये सकारात्मक कदम उठाये। भारतीय समाज में व्याप्त भेदभाव को समाप्त करने के लिए संवैधानिक प्रावधानों की वकालत की है, उन्होंने दलितों को समाज की मुख्य धारा में लाने के लिए विशेष प्रावधानों की व्याख्या की है। अम्बेडकर ने वर्ण व्यवस्था के सिद्धान्त का गहनता से अध्ययन कर दलितों की स्थिति में सुधार के लिए सामाजिक स्तर पर संघर्ष किया है। राजनीतिक स्तर पर उनके लिए विशेष प्रावधानों की वकालत की है। जिससे दलित अपने जीवन की न्यूनतम आवश्यकताओं की पूर्ति कर सम्मानजनक

जीवन जी सके। भारतीय समाज के दलितों को समाज की मुख्यधारा से जोड़ने के लिए विशेष प्रावधानों की मांग रखी है। सही अर्थों में भारतीय लोकतन्त्र को सुदृढ़ करने में सराहनीय कदम उठाया है।

वहीं जॉन राल्स न्यूनतम सुविधा से वंचितों के लिए सम्मानजनक जीवन जीने की व्यवस्था की व्याख्या करते हैं। समाज के न्यूनतम सुविधाओं से वंचित लोगों के पक्ष में वितरणात्मक न्याय की व्याख्या राल्स का मुख्य अधिविन्यास (Configuration) है। किन्तु दोनों की स्थिति एवं परिस्थितियाँ भिन्न होने के कारण दोनों का तुलनात्मक अध्ययन अपेक्षित है।

शोध का महत्त्व समाज में सामाजिक न्याय की अवधारणा के सन्दर्भ में राल्स के विचारबन्द को अम्बेडकर के सामाजिक प्रतिरूप से तुलना करना लक्ष्य रहेगा। अत: दोनों विद्वानों की तुलना करके न्याय की संकल्पना को व्यापक रूप से समष्टिवादी दृष्टिकोण के आधार पर पश्चिमी और भारतीय संरचना के संदर्भ में एक मौलिक मीमांसा करना है। इसी से वैचारिक एवं भौतिक परिस्थितियों का विवेचन हो सकेगा।

5. Review of work already done on the subject of proposed Research Study -

प्रस्तावित शोध कार्य 'जॉन राल्स एवं भीमराव अम्बेडकर के सामाजिक न्याय की अवधारणा का तुलनात्मक मूल्यांकन' के लिए निम्नलिखित पुस्तकों की समीक्षा की गई-

- **जॉन राल्स** ने अपनी पुस्तक '**ए थ्यॉरी ऑफ जस्टीस**', 1971 में सामाजिक न्याय सिद्धान्त को परिभाषित करने का प्रयास किया है। यह आधुनिक शोध पर आधारित है। राल्स सामाजिक संस्थाओं के लिए राजनैतिक या सामाजिक कार्यों और नीतियों को सही ठहराने वाले पारम्परिक दार्शनिक तर्क से असन्तुष्ट थे। वे मानते हैं उपयोगितावादी तर्क 'अधिकतम व्यक्तियों का अधिकम सुख' सम्पूर्ण समाज के लिए हितकारी नहीं हो सकता। यह तर्क अल्पसंख्यकों पर बहुमत के अत्याचार के विचार के साथ संगत प्रतीत होता है। राल्स ने अपनी पुस्तक में 'प्रगति बनाम न्याय' में विवाद में न्याय को प्रमुख स्थान दिया है। प्राथमिक वस्तुओं का वितरण इस तरह होगा कि हिनतम स्थिति वाले मनुष्य को अधिकतम लाभ होगा, किसी भी व्यक्ति की असाधारण योग्यता और परिश्रम के लिए विशेष पुरस्कार तभी मान्य होगा जब उससे समाज के दीन-हीन मनुष्य को अधिकतम लाभ पहुँचे। यह शर्त पूरी होने पर प्रतिस्पर्द्धात्मक अर्थव्यवस्था के अन्तर्गत कार्यकुशलता का मापदण्ड लागू किया जा सकता है।
- **जॉन राल्स** ने '**पॉलिटिकल लिबरलिज्म**', **1993** में जॉन राल्स ने अपने न्याय उचितता के रुप में विचार को आगे बढ़ाता है। राल्स इस पुस्तक में अपनी पहली पुस्तक 'थ्यॉरी ऑफ जसटीस (1971)' में वर्णित इसी विचार को एक मूलभूत प्रकार से संशोधित करता है। वह न्याय को पुन: परिभाषित करने की आवश्यकता महसूस करता है और व्यवस्थित समाज की अवधारणा को भी पुन: परिभाषित करता है। वह यह मानता है कि समाज आधारभूत नैतिक मान्यताओं में संगठित नहीं है अपितु न्याय के राजनैतिक स्वरूप पर सहमत हो सकता है। इसलिए न्याय उचितता के रुप में एक राजनैतिक अवधारणा है। उसने बहुलवादी समाज में न्याय के प्रश्न को नए तरीके से सम्बोधित किया है।

✣ **नरेश दाधीच** ने '**जॉन राल्स का न्याय सिद्धांत**', 2003 पुस्तक में राल्स की पुस्तक 'ए थ्यॉरी ऑफ जस्टिस' का हिन्दी में प्रस्तुतीकरण किया है। जो कि जॉन राल्स के न्याय सिद्धान्त को उसके मौलिक भाव में प्रस्तुत करता है। उसने राल्स की इस पुस्तक के साथ 'पॉलिटिकल लिबरलिज्म' एवं राल्स के अन्य लेखों को भी उसी भाव के साथ प्रस्तुत करने का प्रयास है। यह पुस्तक हिन्दी भाषा में जॉन राल्स के न्याय सिद्धान्त को समझने के लिए सर्वोत्तम पुस्तक है।

✣ **प्रो. सुखदेव थोरट 'Dalit in India Search for a Common Destiny', 2001** में दलितों की स्थिति का राज्यवार विश्लेषण करते हैं। वे सामाजिक और आर्थिक आधार पर जैसे लैंगिक, शहरी क्षेत्र में स्थिति, स्वामित्व के आधार पर, आय अर्जित करने के आधार, कृषि भूमि पर स्वामित्व, व्यवसाय में स्थिति, ग्रामीण श्रमिकों की स्थिति, गरीबी शिक्षा का स्तर, स्वास्थ्य का स्तर, छूआछूत की स्थिति और सामाजिक भेदभाव के आधार पर वे दलितों की स्थिति का विश्लेषण करते हैं। यह पुस्तक वर्तमान में भारत में दलितों की स्थिति को समझने में और उनकी स्थिति में सुधार के लिए सुझाव भी प्रस्तुत करती है। यह शोधार्थी के लिए सामाजिक स्थिति के मूल्यांकन में सहायक है।

✣ **जुगल किशोर बौद्ध** ने अपनी पुस्तक '**अछूत कौन और कैसे**', 2011 में डॉ. भीमराव अम्बेडकर कृत अंग्रेजी पुस्तक The Untouchable का प्रमाणिक और विश्वसनीय अनुवाद हिन्दी में किया है। जिसमें ऐतिहासिक आधार पर बताया गया है कि अछूत कौन थे और उनकी यह स्थिति कैसे हुई का वर्णन है। उन्होंने अछूतपन का हिन्दुओं और गैर हिन्दुओं में तुलनात्मक सर्वेक्षण किया है। अछूतों की आवास समस्या का विस्तार से मूल्यांकन किया है। अछूतपन के पुराने सिद्धान्त और नवीन सिद्धान्तों का पृथक वर्णन किया है।

✣ **गणेश मंत्री** ने अपनी पुस्तक '**गाँधी और अम्बेडकर**', 2009 में सामयिक सामाजिक-राजनीतिक सन्दर्भ में गाँधी और अम्बेडकर गाँधी और अम्बेडकर पर अलग से अनेक और विस्तृत अध्ययन हुए है किन्तु दोनों के विचारों-कार्यों पर अस्पृश्यों की सामाजिक स्थिति में परिवर्तन की दृष्टि से छुटपुट और आंशिक कार्य हुआ है। प्रस्तावित अध्ययन का उद्देश्य

गाँधी और अम्बेडकर का समग्र रुप से तुलनात्मक विवेचन किया गया है। जिसमें इन दोनों व्यक्तियों के जीवन सन्दर्भों, विचारधाराओं, स्वतन्त्रता आन्दोलन के समय सामाजिक राजनीतिक प्रक्रियाओं का विश्लेषण किया गया है। इसके साथ ही स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद इन दोनों की भूमिका वैचारिक उत्तराधिकार और दलितों की आज की स्थिति में इनकी प्रासंगिकता की खोजबीन की गई है। इन दोनों ने अस्पृश्यता का भारतीय समाज व्यवस्था का महारोग माना और उसे मिटाने के लिए संकल्पपूर्वक प्रयत्न किए। इस अध्ययन में समसामयिक इतिहास, राजनीतिक विचारधारा, समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र और सामाजिक मनोविज्ञान जैसे अध्ययन-अनुशासन की परिधियों को छुआ है।

- **डॉ. कामथ** ने '**डॉ. बी. आर. अम्बेडकर, बायोग्राफी, फोटो, गीत, क्वीज**', 2014 में डॉ. भीमराव अम्बेडकर के जीवन, शिक्षा, संघर्ष आदि का रोचपूर्ण तरीके से प्रस्तुतीकरण किया गया है। अम्बेडकर को आधुनिक भारत का सामाजिक आर्थिक सुधारक के रुप में प्रस्तुत किया है। उनके संविधान निर्माण में योगदान पूना पैक्ट आदि सम्पूर्ण उपलब्धियों का वर्णन मिलता है।

- **ममता यादव** ने अपनी पुस्तक '**Dalit in India: Past and Present**', 2010 में के प्रथम भाग में दलित व्यवस्था के मूल कारणों को समझाया है। आगे उन्होंने दलितों के इतिहास को बताया है। दलितों की पृष्ठभूमि में उन्होंने ऋग्वेद परम्परा और आर्यों की भूमिका को स्पष्ट किया है। उन्होंने दलितों की सामाजिक एवं पारिवारिक स्थिति को वर्णन किया है। पुस्तक के अंतिम भाग में उन्होंने दलितों के अतीत में हुये आन्दोलन तथा वर्तमान में दलित आन्दोलनों का वर्णन किया है।

- **डॉ. नीतू काजल** ने '**दलित सशक्तिकरण**', 2010 पुस्तक में दलित शब्द का अभिप्राय और दलित की परिभाषा को समझाया है। उन्होंने हरियाणा में दलितों की सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक स्थिति का अध्ययन कर, आंकड़ों के माध्यम से सीमक्षा की है। संवैधानिक प्रावधानों से पूर्व हुये दलित सशक्तिकरण के आन्दोलनों का उल्लेख इस पुस्तक में मिलता है। दलितों के लिए संवैधानिक प्रावधान और उनमें क्रियान्वयन का विवरण निष्कर्ष पूर्ण तरीके से किया है। उन्होंने डॉ अम्बेडकर के बाद दलित सशक्तिकरण

आन्दोलनों का विस्तार से वर्णन किया है। पुस्तक के अन्तिम भाग में उन्होंने दलितों का सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक सशक्तिकरण वर्तमान की स्थिति पर प्रकाश डालकर अपने निष्कर्ष और सुझाव प्रस्तुत किये है।

- **प्रो. श्यामलाल** ने '**सामाजिक न्याय एवं दलित राजनीति**', 2004 में सामाजिक न्याय एवं दलित राजनीति पुस्तक में पुस्तक में आगे उन्होंने समझाया है कि दलितों की स्थिति कैसी है उन्हें अपनी आजीविका के लिए किन-किन संकटों से गुजरना पड़ता है। सामाजिक न्याय की वस्तु स्थिति को तथ्यों के माध्यम से स्पष्ट किया है। इसके प्रति राजनीतिक दलों के उपेक्षापूर्ण व्यवहार को भी समझाने का सफल प्रयास किया है। उक्त पुस्तक तथ्यपरक रूप से दलितों की स्थिति समझने के लिये उपयोगी है।

- **डॉ. राजेश पुष्कर** ने अपनी कृति '**डॉ. अम्बेडकर और सामाजिक न्याय**', 1994 द्वारा सामाजिक न्याय पर बेबाक टिप्पणियाँ दी है तथा दर्शाया है कि सामाजिक न्याय का संकल्प डॉ. अम्बेडकर के दृष्टिकोण के साथ विद्यमान है।

6. Research Gaps identified in the proposed field of investigation

अम्बेडकर और जॉन राल्स के सामाजिक न्याय की पृथक-पृथक विवेचना अनेक विद्वानों द्वारा की गई है, लेकिन राजनीतिक चिन्तन की दृष्टि से शुद्ध बौद्धिकता और वैचारिक प्रतिबद्धता के साक्ष्य के रूप में इनको प्रस्तुत करने की ओर बहुत कम ध्यान दिया गया है। प्रस्तुत शोध में इसी खाई को पाटने का प्रयास किया जायेगा। दोनों विद्वानों ने पकी-पकायी मान्यताओं की वकालात करने के बजाय सूक्ष्म चिन्तन किया है। जहाँ डॉ. अम्बेडकर ने दलित-बहुजन के हितों, आकांशाओं, अपेक्षाओं और आशाओं को सम्मान देने का प्रयाय किया है वहीं जॉन राल्स ने समाज के न्यूनतम सुविधाओं से वंचितों के सम्बन्ध में उचित व्यवस्था की व्याख्या की है।

राल्स ने न्याय के नैतिक, राजनीतिक, सामाजिक एवं भौतिक आयामों का पूर्ण विचारबन्ध प्रस्तुत किया है लेकिन अम्बेडकर के विचारों में सामाजिक असमानता और दलितों के संवैधानिक पक्ष आदि पर अधिक व्याख्या की है। इस खाई को शोध प्रबन्ध में स्पष्ट करने का प्रयास भी उद्देश्य होगा।

7. Objective -

प्रस्तुत अध्ययन में समाज के न्यूनतम सुविधाओं से वंचितों को सम्मानजनक जीवन प्रदान करने के लिए राजनीति विज्ञान के दो विचारकों द्वारा दी गई अवधारणा का तुलनात्मक मूल्यांकन सुनिश्चित किया गया है। अध्ययन में सामाजिक न्याय की अवधारणा के विशेष सन्दर्भ में जॉन राल्स और डॉ. अम्बेडकर के विचारों का मूल्यांकन करने का प्रयास किया जायेगा। अध्ययन मुख्यत: निम्नलिखित उद्देश्यों पर केन्द्रीत रहेगा:-

1. प्रत्यात्मक आधार के स्पष्टीकरण के उपरान्त शोध विषय के विभिन्न पहलुओं को नियोजित करते हुए जॉन राल्स और डॉ. अम्बेडकर की अपनी-अपनी सामाजिक न्याय की विशिष्ट मान्यताओं की अनेक सारभूत एवं महत्त्वपूर्ण तात्विक संकल्पनाओं और उनमें आन्तरिक सम्बन्ध का प्रारम्भिक परीक्षण करते हुए विशद् विवेचना की दिशा को निर्धारित करना शोधार्थी का मुख्य उद्देश्य रहेगा।

2. सामाजिक न्याय और नागरिक समाज की रचना का सवाल इस आंकलन से जुड़ा हुआ है कि समाज का उच्च वर्ग उपयोगितावादी और समूहवादी रूझाने से ग्रस्त है।इस परिप्रेक्ष्य में जॉन राल्स-अम्बेडकर के विचारों का अध्ययन एक दूसरे ही आख्यान का उद्घाटन कर सकता है। जिसके माध्यम से व्यक्ति की एकता और समूह की प्रभुसत्ता के बीच तनाव की उलझन को सामाजिक न्याय के नजरिये से हल करने का प्रयास करना।

3. इस आधार पर समाज की सभी कड़ियों में सहभागिता की उदयीमान प्रवृत्ति को इंगित करना।

4. समाज की कमजोर कड़ियों को मजबूत करने की दिशा में सकारात्मक परिवर्तनों के लिए उचित उपायों को अध्ययन के निष्कर्षों के माध्यम से प्रस्तुत करना।

5. शोध का मुख्य उद्देश्य समाज के न्यूनतम सुविधाओं से वंचितों के लिये सम्मानजनक जीवन प्रदान करने के लिए उचित व्यवस्था की व्यूरचना प्रस्तावित करना होगा।

6. शोध का उद्देश्य सामाजिक न्याय पर दोनों विचारकों के विचारों की पुर्नव्याख्या कर राजनीतिक आवश्यकताओं को रेखांकित करने पर बल देना है।

9. Research Materials & Methodology

1. विषय की प्रकृति मूल्यवादी और दार्शनिक होने के फलस्वरूप, शोध विवेचना का आधार मूल स्त्रोतों एवं ग्रंथों के विचारों की मीमांसा को स्पष्ट करना है।

2. अत: शोध सामग्रह पूर्णत: सैद्धान्तिक होने से अनुभववादी या वैज्ञानिक पद्धति से ऊपर पराभौतिक मानकों पर आधारित होगी।

सैद्धान्तिक पक्षों के लिए विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण से विभिन्न प्रतिवेदनों, अध्ययनों, पुस्तकों से प्राप्त सामाग्री, विशिष्ट एवं बौद्धिक लेखों आदि के माध्यम से उपलब्ध तथ्यों व विचारों का विश्लेषण किया जायेगा।इस प्रकार अध्ययन में प्राथमिक व द्वितीयक दोनों प्रकार की स्त्रोतों का प्रयोग किया जायेगा।

10. Chapterwise details of proposed research

प्रस्तावना:

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में अध्ययन का राल्स और अम्बेडकर के विचारों और सामाजिक संरचना में एक ऐसे सिद्धान्त और आदर्शों की परिकल्पना और प्रस्तावना की योजना है जिसमें आम जनता को जीवन के मूल भौतिक और आर्थिक साधनों का न्यायोचित वितरण किन प्रावधानों से संभव है। राल्स की न्यायधारणा में पराभौतिक और दार्शनिक शब्दावली जैसे कि समाज की मूल स्थिति और ज्ञान का अभाव न्याय के दो बाधक तत्व के रूप में अवधारणात्मक व्याख्या है। जबकि अम्बेडकर एक अनुभववादी दृष्टिकोण से समाज में वर्गीय विषमता एवं कृत्रिम विभिन्नता के विरुद्ध संवैधानिक प्रक्रिया के द्वारा समाज में सुधार का प्रतिवाद था।

उपरोक्त दोनों परिपेक्ष्य में समाज में उचित शासित व्यवस्था एवं प्राकृतिक कर्तव्य और राजनीतिक उत्तरदायित्व का अध्ययन इस शोध का केन्द्र बिन्दु रखने का प्रयास किया जायेगा।

1. सामाजिक न्याय की अवधारणा :

राल्स के अमूर्त एवं दार्शनिक न्याय के सिद्धान्त एवं अम्बेडकर के संवैधानिक सामाजिक न्याय के उद्देश्यों का विवेचन इस अध्याय का मुख्य उद्देश्य होगा।

राल्स के न्याय के प्रतिरूप में पश्चिमी चिन्तन की परम्परा मुख्य आधार है लेकिन अम्बेडकर का वैचारिक पक्ष समाजवादी के रूप में व्याख्यित किया जायेगा। हालांकि उसके मुख्य लक्ष्य में दलित एवं शोषित के उत्थान का सुधारवादी आयाम अधिक प्रबल है। अत: अध्याय में दार्शनिक, सामाजिक, आर्थिक, विचारों का समाज और राजनीतिक सत्ता और समकालीन आलोचकों का पक्ष व्याख्या के मुख्य बिन्दु होंगे।

2. वितरणात्मक न्याय एवं उपयोगितावादी परम्परा :

राल्स के न्याय में निहित वितरणात्मक न्याय एवं उपयोगितावादी परम्परा का अध्ययन होगा। राल्स के सुशासित समाज की मान्यताओं को उल्लेखित करना होगा। राल्स के न्याय दर्शन में विशेष अवधारणाओं का जैसे कि सामाजिक समझौते की परम्परा और समाज की मूल संरचना में अन्तर स्पष्ट करना।

3. अम्बेडकर के सामाजिक न्याय का सिद्धान्त :

अम्बेडकर 20वीं शताब्दी के प्रबुद्ध दार्शनिक माने जाते हैं। जिसने पश्चिमी शैली के शिक्षा के बावजूद भारतीय समाज के मौलिक सामाजिक संरचना में व्याप्त विषमताओं और अन्यायपूर्ण कुरीति, वर्ग–विभेद आदि के उन्मूलन के लिये एक सविनय आन्दोलन की आधारशिला रखी और निरन्तर इनकी व्याख्या करते हुये राष्ट्र निर्माण में संवैधानिक उपचार द्वारा सामाजिक समानता और अवसर आदि के मूल्यों के लिये संविधान की रचना तक सहर्ष और प्रयास किया। इस सन्दर्भ में अध्याय का मुख्य लक्ष्य राल्स के अमूर्त दर्शन और अम्बेडकर के यथार्थ सुधारवादी नीतियों का समालोचन किया जायेगा।

4. न्याय एवं सामाजिक न्याय का प्रतिमानः

अध्याय में न्याय के प्रतिरूप का ऐतिहासिक एवं सामाजिक आयाम का अध्ययन किया जायेगा क्योंकि इसमें समष्टिवादी दृष्टिकोण निहित है जबकि अम्बेडकर के सामाजिक न्याय की अवधारणा मूलतः नैसर्गिक एवं कानूनी परिप्रेक्ष्य से सम्बन्धित है। अतः राल्स के नैतिक एवं उपयोगितावादी अधिविन्यास का अम्बेडकर के सामाजिक सुधार और सामाजिक न्याय के तार्किक विचारों का विवेचन करना इसमें मुख्य उद्देश्य रहेगा।

5. राल्स और अम्बेडकर के न्याय की विचारधारा का प्रतिरूपः

इस अध्याय में राल्स के समाजवादी रूढ़ीवादी आदि वैचारिक पक्षों की अम्बेडकर के संवैधानिक एवं व्यक्तिक अधिकारों से सम्बन्धित सामाजिक न्याय की परिस्थितियों की विवेचना अपेक्षित होगी।

6. निष्कर्षः

निष्कर्ष में पश्चिमी समकालीन उदारवादी राल्स के सिद्धान्त का महत्व सुव्यस्थित शासन और न्याय की मीमांशा को स्पष्ट करना होगा एवं अम्बेडकर के विशिष्ट मानवीय न्यायवादी विचारों का क्रांतिकारी देन के रूप में महत्त्व का आंकलन निहित होगा।

11. Bibliography

1. Arundhati Roy. : "The Doctor and the Saint". caravanmagazine.in. Retrieved 6 April 2014.
2. Adam Swift. : Liberals and Communitarians . Revised version. Oxford: Blackwell, 1996.
3. Ahir D.C. : Dr. Ambedkar on Buddhism, People's Education Society, Bombay 1982.
4. Ahir, D.C. : Gandhi and Amedkar, Study Circle Jullunder (1979)
5. Albrow, Martin : Sociology : The Basic -London: Routledge, 2003
6. Aloysius, G. : Nationalism without a Nation in India -Delhi: OUP, 1997
7. Atal Yogesh : Indian Sociology : From where to where: Footnotes to the Histary of Discipline, Rawat, Jaipur, 2003.
8. Avineri, S. and de-Shalit, Barry, Brian : Theories of Justice. A Treatise on Social Justice, 1. Berkeley: University, of California Press, 1989.
9. Barve, S.G. : Dr. B.R. Ambedkar-A Symbol of Social Revolt, Maharashtra Information Centre, 1967.
10. Beteille, Andre : Equality and Universality Essays in Social and Political Theory -New Delhi: OUP, 2003
11. Beteille, Andre : Sociology Essays on Approach & Method -New Delhi: OUP, 2002
12. Bharill, C : Social and Political Ideas of B.R. Ambedkar, Aalesh (Jaipur), 1977.
13. Bhattacharya, Jovendra nath : Hindu Castes and Sects -New Delhi: Munshiram Manoharlal Publishers, 1995
14. Buchanan, Allen E. : "Assessing the Communitarian Critique of Liberalism." Ethics, 1989.
15. Cohen, Joshua. : "Deliberation and Democratic Legitimacy." The Good Polity . Alan Hamlin and Philip Pettit (red.) Oxford: Blackwell, 1989.
16. Deepak Mahadeo Rao Department : Dr. Babasahib Ambedkar and the Movement of Untouchables, Vol. I, Bombay, 1982.
17. Dhale Raja : Dr. Ambedkar and Revolution, 1976.
18. Dongre, M.K. Dr. Ambedkar : Economic Thoughts of Dr B.R. Ambedkar, Ambedkar Samaj (Nagpur), 1974.
19. Dr. Ambedkar B. R. : Annihilation of Caste, Published by Bhalchandra Mungekar for Dr. Ambedkar Institute of Social and Economic Change, Bombay, 1936.
20. Dr. Ambedkar B. R. : Mr. Gandhi and the Emanicipation of the untouchable Bhim Patrika, 1945.
21. Dr. Ambedkar B. R. : Who were the shudras ? Bombay, Thackers, 1949
22. Dr. Ambedkar B. R. : Writing and Speeches Vol. I, II, III, IV, VII, VIII, XI, Govt. of Maharashtra publications, Mumbai, 1949

23. Dube, S.C. : Indian Socety -New Delhi: National Book Trust, 1990
24. Dumont, Louis : Homo Hierarchicus the Caste System and Its Implications -Delhi: OUP, 1988
25. E.Zelliott MichealMahar : The Untouchables in Contemporary India ,Arizona Press, 1972
26. Barker, Paul : Living as Equals -New Delhi: OUP, 1996
27. Fuller, C.J. : Caste Today -Delhi: OUP, 1996
28. Jha, Hetukar : Perspectives on Indian Society and History ACritique -New Delhi: Manohar Publications, 2002
29. Mahajan, Gurpreet : The Public the Private Issues of Democratic Citizenship -New Delhi: SAGE Publications, 2003
30. Pinto,Ambrose : State, Development And Alternatives -New Delhi: Indian Social Institute, 1999
31. Robb, Peter : Dalit Movements the Meanings of Labour in India-Delhi: OUP, 1993
32. Fuller, C.J.& Benei, Veronique : The Everyday State & Society in Modern India - New Delhi: Social Science Press,2000
33. Freeman, S. : Rawls (Routledge, Abingdon) (2007)
34. Gauthier, David. : Morals by Agreement . Oxford: Clarendon Press, 1986.
35. Gore M.S. : The Social Contex of an Ideology : Ambedkar's Political Thought, SAGE Publication, New Delhi 1993.
36. HerbertA. Simon. : Organizations . 2. Ed. London: Blackwell., 1993 [1958].
37. Jaffrelot, Chgristophe : India's Silent Revolution The Rise of the Low Castes in North Indian Politcs -Delhi: Permanent Black, 2003
38. Jatva D.R : The Political Philosophy of Ambedkar, Phoenix,Agra 1965
39 Jatav D. R. : Indian Society Culture and Ideologies, Surrabhi Publication, Jaipur 1998.
40. Jatva D.R. : The Social Philosophy of Ambedkar, Phoenix, Agra 1965.
41. Katzenstein, Mary Fainsod : Social Movements in India-New Delhi: OUP, 2005
42. Keer,D. : Dr.Ambedkar : Life and Mission, Popular(Bombay) 1962.
43. Keer. D. : Dr. Ambedkar A. Memorial Album, Popular (Bombay). 1982.
44. Khare, R.S. : Cultural Diversity and Social discontent -New Delhi: SAGE Publications, 1998
45. Krishna Iyer, Mr Justice, V.R. : Ambedkar Memorial Lectures-Jawaharlal Nehru University, New Delhi, 1976.
46. Kuber, W.N. : Dr.Ambedkar: A Critical Study, PPH (New Delhi) 1973.

47. Kuber, W.N. : B.R. Ambedkar : A Biography, Govt. of India Publication (New Delhi) 1978.

48. Lal, A.K. : Protective Discrimination Ideology and Praxis -New Delhi: Concept Publishing Company, 2002

49. Lokhande G.S. : Bhimrao Ramji Ambedkar : A Study in Social Democracy, Sterling(New Delhi) 1977.

50. Macedo, Stephen. : Liberal Virtues: Citizenship, Virtue, and Community in Liberal Constitutionalism . Oxford: Clarendon Press, 1990.

51. March, James G. og Johan P. Olsen : Rediscovering Institutions: the Organizational Basis of Politics . New York: Free Press, 1989.

52. March, James G., and Massey, James : Dr. B. R. Ambedkar A Study in Just Society -New Delhi: Manohar Publishers, 2003

53. Mukherjee, Prabhati : Beyond The Four varnas the Untouchables in India -Shimla: Indian Institute of Advanced Study, 1988

54. Mulhall, Stephen, and Nongbri, Tiplut : Development, Ethnicity and Gender -New Delhi: Rawat Publications, 2003

55. Quigley, Declan : The interpretation of Caste -New Delhi: OUP, 2001

56. Raj Gopalachari C. : Ambedkar Rebuted, Hind Kitab's, bombay 1946.

57. Rajasekhariah, A.M. : B.R. Ambedkar : The Politics of Emancipation, Sindhu (Bombay), 1975.

58. Rajsekharaiya A.M. : B.R.Ambedkar The Politics emancipation, Sindu Publication, Bombay 1971

59. Rasmussen, David. : Universalism vs. Communitarianism: Contemporary Debates in Ethics . Cambridge, Mass: MIT Press, 1990

60. Rawls John : A Theory of justice, Harvard University Press Cambridge, 1971

61. Rawls John : Political Liberalism, Columbia University Press, New York, 1993

62. Rawls John : The Law of Peoples, Harvard University Press Cambridge, 1999

63. Richardson, Henry og Paul Robin, J. : Dr. Ambedkar and His Movement, Ambedkar Society (Hyderabad), 1965.

64. Rousseau, Jean-Jacques. : On the Social Contract . Roger D. Masters (red.= New York: St.Martin's Press, 1978 [1762].

65. Sandel, Michael J. : Liberalism and the Limits of Justice . Cambridge: Cambridge University Press, 1982.

66. Satyanarayana A. : Dalits and Upper Castes -New Delhi: Kanishka Publishers, 2005

67. Sharma, Pradeep K. : Dalit Politics and Literature -New Delhi: Shipra Publications, 2006

68. Singh, Hoshiar Malik,A.S. : Socio-Economic Development of Scheduled Castes in India-Jaipur: Aalekh Publishers, 2001
69. Tope, T.K. : Dr. B.R. Ambedkar-Maharashtra Information Centre, New Delhi, 1964.
70. Zelliot Eleanor : From Untouchable to Dalit: Essays on Ambedkar Movement, Manohar Publication, New Delhi, 1992
71. थोरात मा.प. : डॉ. अम्बेडकर आधुनिक विज्ञान आणि मानव, डॉ. अम्बेडकर अध्यासन, नागपुर विद्यापीठ, नागपुर, 1999.
72. सरदेसाई एस.सी. : भारतीय तत्त्वज्ञान वैचारिक आणि सामाजिक संघर्ष, लोकवाङ्मय, मुम्बई-1989
73. कसबे राव साहेब : डॉ. अम्बेडकरवाद : तत्त्व आणि व्यवहार, सुगावा प्रकाशन, पुणे 1981
74. बाली एम.आर. : डॉ. अम्बेडर जीवन और मिशन, भीमपत्रिका प्रकाशन, जालंधर 2006
75. भटनागर राजेन्द्रमोहन : डॉ. अम्बेडकर चिंतन और विचार, जगतराम एण्ड संस, सरस्वती भंडार गांधीनगर, दिल्ली
76. पालीवाल कृष्णदत्त : डॉ. अम्बेडकर समाज-व्यवस्था, किताबघर, दरियागंज, नई दिल्ली 1996
77. खरात डॉ. प्रकाश : डॉ. अम्बेडकरवाद समाज आणि संस्कृति, आकांक्षा प्रकशन, नागपुर 2005
78. जाटव डी.आर. : डॉ. अम्बेडकर भारतीय दर्शन के समीक्षक, समता साहित्य 'सदन जयपुर'

17.4.2015

Signature of the Candidate with date

Outline Approved

(Dr. S. K. Singh)

15-4/2015

Name and Signature of supervisor with date

APPENDIX - VI

MAHARSHI DAYANAND SARASWATI UNIVERSITY, AJMER

Certificate By Supervisor

Certified that :

1. I am willing to guide the research work of Shri/~~Km./Smt.~~ Vimal Kumar Malawar on the above subject if he/she is registered for Ph.D.
2. To the best of my knowledge, the subject selected has not been studied and is not being studied so far in any University.
3. The subject is of sufficient scope to keep the candidate engaged for two years.
4. The subject will lead to a valuable contribution. I have seen and approved the outline of proposed research work submitted by the candidate.
5. I have 02 (give numbers) Research candidates registered under my supervision and the serial number of this candidate whose application is being forwarded for registration is 02 (give the serial number)
6. The candidate is not in a close relation (the term of close relation is defined in the examination ordinance of the University)

(Dr. S. K. Singh)
19/5/2015

Signature of the Supervisor with date

Certified that the available facilities will be extended to Shri/~~Km./Smt.~~ Vimal Kumar Malawar for research work if he/~~she~~ is registered for Ph.D.

Vice Principal, GCA

Signature of the Principal/ ~~Director~~ of the Institution with date

Signature of ~~the Head,~~ Department with date
19/5/2015